चालुक्य राजवंश एक प्रमुख भारतीय राजवंश था जिसने अपने इतिहास के विभिन्न अवधियों के दौरान दक्षिणी और मध्य भारत के विभिन्न हिस्सों पर शासन किया था। चालुक्य भारतीय कला, वास्तुकला और संस्कृति में अपने योगदान के लिए जाने जाते थे। चालुक्य राजवंश के बारे में मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

1. उत्पत्ति:

- चालुक्य राजवंश की कई शाखाएँ थीं जिन्होंने विभिन्न समय पर भारत के विभिन्न क्षेत्रों पर शासन किया। दो सबसे प्रसिद्ध शाखाएँ पश्चिमी चालुक्य और पूर्वी चालुक्य थीं।
- पश्चिमी चालुक्य, जिन्हें बादामी के चालुक्य के नाम से भी जाना जाता है, ने दक्कन क्षेत्र में शासन किया, उनकी राजधानी बादामी (वर्तमान कर्नाटक में) थी।
- पूर्वी चालुक्य, जिन्हें वेंगी के चालुक्य के नाम से भी जाना जाता है, भारत के पूर्वी तटीय क्षेत्रों में शासन करते थे, उनकी राजधानी वेंगी (वर्तमान आंध्र प्रदेश में) थी।

2. पश्चिमी चालुक्य:

- पुलकेशिन प्रथम द्वारा स्थापित पश्चिमी चालुक्य छठी शताब्दी ई.पू. में प्रमुखता से उभरे।
- उनका शासन अक्सर गुफा मंदिरों के निर्माण से जुड़ा हुआ है, खासकर बादामी, ऐहोल और पट्टदकल में, जो प्रारंभिक चालुक्य वास्तुकला का प्रदर्शन करते हैं।
- राजवंश पुलकेशिन द्वितीय के तहत अपने चरम पर पहुंच गया, जिसने पल्लवों और राष्ट्रकूटों की प्रगति का सफलतापूर्वक विरोध किया।

3. पूर्वी चालुक्य:

- चालुक्य भीम द्वारा स्थापित पूर्वी चालुक्यों ने 7वीं से 12वीं शताब्दी तक भारत के पूर्वी तटीय क्षेत्र में शासन किया।
- वे कला और संस्कृति के संरक्षण के लिए जाने जाते थे, जिसमें मंदिरों का निर्माण भी शामिल था, विशेषकर द्रक्षाराम मंदिर का।
- राजवंश में चोलों और कल्याणी के चालुक्यों जैसे अन्य शक्तिशाली दक्षिण भारतीय राजवंशों के साथ प्रतिद्वंद्विता और गठबंधन की अवधि थी।

4. वास्तुकला:

- चालुक्यों ने भारतीय मंदिर वास्तुकला, विशेषकर दक्कन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- उनके मंदिरों में अक्सर अनूठी शैली, जटिल नक्काशी और डिजाइन में नवीन प्रयोग होते हैं।

5. धर्म:

- चालुक्य हिंदू और जैन दोनों धर्मों के संरक्षक थे। उन्होंने दोनों धार्मिक समुदायों के लिए मंदिर और मठ बनवाए।

6. अस्वीकार**:**

- पश्चिमी और पूर्वी दोनों चालुक्य राजवंशों को राष्ट्रकूट और चोलों सहित प्रतिद्वंद्वी राजवंशों से चुनौतियों का सामना करना पड़ा।
- पश्चिमी चालुक्य राष्ट्रकूटों के अधीन हो गए, जबकि पूर्वी चालुक्यों को रुक-रुक कर गिरावट और पुनरुत्थान का सामना करना पड़ा।

7. विरासत**:**

- चालुक्य राजवंश को दक्षिण भारत में कला, वास्तुकला और संस्कृति में योगदान के लिए याद किया जाता है।
- उनकी स्थापत्य शैली, विशेषकर मंदिर निर्माण की चालुक्य शैली, बाद के राजवंशों को प्रभावित करती रही।

LEARNING MANTRAS